7/8/1964 रात्रि क्लास :– अमृतसर अच्छा गाँव है; क्योंकि प्रवृत्तिमार्ग दूसरे नम्बर में गुरुनानक का चला है। पंजाब में महाराजा–महारानी भी हुए हैं। अकालमूर्त कहते हैं, जिसको काल नहीं खा सकते। काल तो आत्माओं को भी नहीं खा सकते। अमृतसर में अकाल तख्त भी बनते हैं। कहते हैं– अकालमूर्त। उनका अकाल तख्त। अब अकाल तख्त तो वास्तव में सोमनाथ मंदिर भी ठहरा। एक अकाल तख्त है सोमनाथ का मंदिर। एक अकाल तख्त हुआ शिव का मंदिर। वास्तव में अकाल तख्त तो यह है चेतन में। बाबा कहते हैं मैं इस चेतन में आता हूँ। फिर बाद में यादगार मेरा तख्त मंदिर बनाते हैं। उनको तो पता नहीं है, आखरीन भी परमपिता परमात्मा किस तख्त पर वा किस रथ पर आते हैं। बाबा कहते हैं, चेतन में तो यहाँ ही हूँ। बाकी भक्तिमार्ग में मंदिर बनाते हैं। फिर भी नाम अकालतख्त अमृतसर में है। इन्हों की राजाई भी हुई है। और कोई धर्म (नहीं) जिसने राजाई स्थापन की हो। सिक्ख धर्म में ही महाराजा–महारानी हुई हैं। अमृतसर बहुत अच्छा गाँव है। वहाँ से सर्विसएबुल बच्चियाँ भी निकली हैं। पहलवान सिपाही भी अमृतसर से आए हैं। अच्छा। ॐ